नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

नीरजा पांडेय संवेदनशील कथाकार - चित्रा मुदगल

वर्धा दि. 2 फरवरी 2016: प्रख्यात कथाकार चित्रा मुदगल ने कहा कि नीरजा पांडेय की कहानी समाज में पनप रही संवेदनहीनता को बयां करती है। यह कहानी बेहद आश्वस्त करने वाली है। इससे पहले मैं उनकी किताब 'चंद पाती प्यारी बिटिया के नाम' पढ़ चुकी हूं। उनकी इस किताब ने मुझे गहरे प्रभावित किया है। उन्होंने कहा कि यह कहानी ऊषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' से आगे की कहानी बयां करती है। उन्होंने कहा कि वे एक संवेदनशील कथाकार हैं और भविष्य में कथा साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराएंगी।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय विवि, वर्धा में आवासीय लेखक के रूप में रह रही श्रीमती चित्रा मुदगल ने यह बात विवि के वर्धा संस्कार प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित सुपरिचित कथाकार नीरजा पांडेय के कहानी पाठ के दौरान अपनी टिप्पणी में कही। लखनऊ निवासी नीरजा पांडेय सुपरिचित कथाकार, कवयित्री और स्त्री विमर्शकार हैं। वे एक निजी यात्रा पर वर्धा आई हुई थीं। कार्यक्रम के दौरान नीरजा पांडेय ने अपनी एक कहानी

'सुबह दस बजे' और तीन कविताओं का पाठ किया।

विवि के नार्गाजुन सराय में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष और समालोचक प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहानी पर विस्तार से अपनी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि नीरजा पांडेय ने संवाद के माध्यम से एक अच्छी कहानी बुनी है और उसके माध्यम से व्यवस्था और समाज की मार झेलते परिवार की व्यथा कही है। कहानी में मां की चुप्पी अर्थवान है। इस बहाने प्रो. मिश्र ने अपने वक्तव्य में समाज में फैल रही दिशाहीनता का मुद्दा भी उठाया।

प्रख्यात आलोचक और विवि के आवासीय लेखक रमेश दवे ने कहा कि आज के परिदृश्य में अच्छी और खराब दोनों किस्म की कहानियां रची जा रही हैं। नीरजा पांडेय की यह कहानी पाठक को सोचने को मजबूर करती है और यही इसकी सफलता है। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी सुश्री रेणु कुमारी ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रोफेसर राकेश मिश्र ने किया। इस अवसर पर कथाकार मनोज कुमार पांडेय, ताना बाना के संपादक राकेश श्रीमाल, बहुवचन के संपादक अशोक मिश्र, कवयित्री हरप्रीत कौर, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डा. कृपाशंकर चौबे, सुश्री सुरभि विप्लव, बी. एस. मिरगे अश्विनी सहित छात्रगण व अन्य व्यक्ति उपस्थित थे।